

भारत सरकार
पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय
राज्य सभा
अतारांकित प्रश्न सं. 3222
31 मार्च, 2022 को उत्तर दिए जाने के लिए

भारतीय समुद्रतट का कटाव

3222. श्री वि. विजयसाई रेड्डी:

क्या पृथ्वी विज्ञान मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

- (क) क्या यह सच कि वर्ष 1990 से वर्ष 2018 के बीच भारतीय समुद्रतट का लगभग 32 प्रतिशत कटाव हो चुका था;
- (ख) यदि हाँ, तो इस प्रकार के समुद्रतटीय कटाव के क्या कारण हैं;
- (ग) क्या सरकार इस प्रकार के समुद्रतटीय कटाव के कारणों, प्रभाव और समाधानों का अध्ययन करने के लिए इसका कोई मानचित्रण करने का विचार रखती है;
- (घ) यदि हाँ, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है;
- (ङ) क्या सरकार द्वारा इस प्रकार के समुद्रतटीय कटाव को नियंत्रित करने के लिए कोई उपशमन प्रयास किए गए हैं; और
- (च) यदि हाँ, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है?

उत्तर

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी तथा पृथ्वी विज्ञान राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार)
(डॉ. जितेंद्र सिंह)

(क) जी, हां। पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय का संबद्ध कार्यालय राष्ट्रीय तटीय अनुसंधान केन्द्र (NCCR) वर्ष 1990 से रिमोट सेंसिंग डेटा तथा GIS मैपिंग तकनीकों का प्रयोग करते हुए तटरेखा कटाव की मॉनिटरिंग कर रहा है। वर्ष 1990 से लेकर 2018 तक भारतीय मुख्यभूमि की कुल 6,632 किमी तटरेखा का विश्लेषण किया गया है। यह पाया गया है कि 33.6% तटरेखा में अलग-अलग स्तर का कटाव हो रहा है। राज्यवार विवरण नीचे दिया गया है:

क्र.सं.	राज्य	तट की लंबाई (किमी में)	कटाव		
			किमी	%	
1	पश्चिमी तट	गुजरात	1945.60	537.5	27.6
2		दमन एवं दीव	31.83	11.02	34.6
3		महाराष्ट्र	739.57	188.26	25.5
4		गोवा	139.64	26.82	19.2
5		कर्नाटक	313.02	74.34	23.7
6		केरल	592.96	275.33	46.4
7	पूर्वी तट	तमिलनाडु	991.47	422.94	42.7
8		पुडुचेरी	41.66	23.42	56.2
9		आंध्र प्रदेश	1027.58	294.89	28.7
10		ओडिशा	549.50	140.72	25.6

11	पश्चिम बंगाल	534.35	323.07	60.5
कुल		6907.18	2318.31	33.6

(ख) तटीय कटाव के कारणों में-चक्रवात की आवृत्ति में वृद्धि, लहरों और समुद्र स्तर में वृद्धि, मानवजनित गतिविधियों जैसे कि बंदरगाह का निर्माण, समुद्रतट पर खनन तथा बांधों (डैम) का निर्माण शामिल हैं।

(ग) जी, हां।

(घ) संपूर्ण भारतीय तट के लिए 526 मानचित्र तैयार किए गए हैं, इन्हें तटीय कटाव के प्रति संवेदनशील क्षेत्रों की पहचान करने के लिए तैयार किया गया है, इसमें 1:25000 पैमाने पर 66 जिला मैप, 10 राज्य / संघशासित प्रदेश मानचित्र हैं। जुलाई, 2018 में "नेशनल एसेसमेंट ऑफ शोरलाइन चेंजेज एलॉन्ग इंडियन कोस्ट" पर एक रिपोर्ट जारी की गई, तथा इसे केन्द्र सरकार एवं राज्य सरकारों की विभिन्न एजेंसियों एवं हितधारकों के साथ साझा किया गया, ताकि तटरेखा संरक्षण उपायों का कार्यान्वयन किया जा सके। सभी मानचित्रों की डिजिटल एवं हार्ड प्रतियां दिनांक 25 मार्च 2022 को रिलीज की गईं।

(ङ) जी, हां।

(च) पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय ने दो प्रायोगिक स्थानों पर तटीय कटाव शमन के नवप्रवर्तनशील उपाय का सफल प्रदर्शन किया।

- (i) पुडुचेरी तटीय जीर्णोद्धार परियोजना, पुडुचेरी
सबमर्ज्ड रीफ का कार्यान्वयन पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय द्वारा किया गया, तथा समुद्र तट पोषण का कार्यान्वयन पुडुचेरी सरकार द्वारा किया गया। इससे 30 वर्षों बाद शहर की 1.5 किमी लंबे समुद्र तट के जीर्णोद्धार में सहायता मिली, तथा पर्यटन एवं मत्स्यपालन गतिविधियों को सुधारने में सहायता मिली, साथ ही चरम चक्रवाती घटनाओं के दौरान तट संरक्षण में भी सहायता मिली।
- (ii) कडालुर पेरिया कुप्पम, तमिलनाडु
एक ऑफशोर सबमर्ज्ड डाइक कार्यान्वित किया गया। इससे चरम चक्रवाती घटनाओं के दौरान मछुआरों के तीन गांव को सुरक्षित रखने में सहायता मिली, तथा खो चुके समुद्र तट को जीर्णोद्धार किया जा सका, जिसे मत्स्यपालन नावों के तट पर पहुँचने एवं अन्य मत्स्यपालन गतिविधियों हेतु प्रयोग किया जा रहा है।
- (iii) इसके अतिरिक्त NCCR केरल (चेलनम, कोल्लमकोड, पूनथुरा, वर्कला और शांगमुघम), ओडिशा (रामायपट्टनम, पुरी, कोणार्क और पेंथा), आंध्र प्रदेश (विशाखापट्टनम) और गोवा की राज्य सरकारों को संवेदनशील स्थानों पर तटीय संरक्षण उपायों के कार्यान्वयन हेतु तकनीकी सहायता भी प्रदान कर रहा है।
